औषधीय गुणों से भरपूर है जिमीकंद

मनप्रीत कौर* और **मनीष कुमार****

जिमीकंद *(अमोर्फोफैलस पेओनीफोलियस)* की खेती भारत, फिलीपींस, इंडोनेशिया, श्रीलंका और अन्य दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों में एक वाणिज्यिक नगदी फसल के रूप में की जाती है। यह एक लोकप्रिय कंद फसल है जिसे सब्जी के रूप में देश के कई हिस्सों में उगाया जाता है। इसकी खेती के तहत क्षेत्र काफी तेजी से बढ़ रहा है। इसमें अन्य सब्जियों की तुलना में प्रति इकाई क्षेत्र में उच्च शुष्क पदार्थ उत्पादन क्षमता होती है और साथ ही इसके कई पोषण और स्वास्थ्य लाभ भी हैं। अत: यह भारत के किसानों के लिए पोषण सुरक्षा की दृष्टि से एक लाभकारी फसल है।

जिमीकंद सबसे लोकप्रिय कंद फसलों में से एक है, जिसका भारत में व्यापक रूप से पसंदीदा सब्जी के रूप में उपयोग किया जाता है। इसमें पोषण और औषधीय दोनों गुण होते हैं और आमतौर पर इसे पकी हुई सब्जी के रूप में खाया जाता है। वर्तमान में इस फसल की लोकप्रियता इसकी छाया सहिष्णुता, खेती में सुगमता, उच्च उत्पादकता, कीट और रोगों का कम प्रकोप और यथोचित अच्छी कीमत के कारण काफी बढ़ रही है। इसके स्टार्चयुक्त कंदों से चिप्स बनते हैं साथ ही तनों और पत्तियों का उपयोग सब्जी के लिए भी किया जाता है। कंद में 18% स्टार्च, 1-5% प्रोटीन और 2% वसा, जबकि इसकी पत्तियों में 2-3% प्रोटीन, 3% कार्बोहाइड्रेट और 4-7% तक कच्चा फाइबर होता है। कंद और पत्तियां ऑक्सालेट की मात्रा अधिक होने के कारण काफी तीखी होती हैं, लेकिन पानी में काफी लंबे समय तक उबालने से आमतौर पर इसकी अम्लता दूर हो जाती है।

*विषय वस्तु विशेषज्ञ (सब्जी विज्ञान एवं पुष्पकृषि), कृषि विज्ञान केंद्र, बरठीं, बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश) **सहायक प्राध्यापक (शाकीय विज्ञान), महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल (हरियाणा)

उत्पादन तकनीक

मृदा और जलवायु

जिमीकंद की फसल विभिन्न प्रकार की मृदा में उगाई जा सकती है। हालांकि अच्छी जल निकास वाली बलुई दोमट या बलुई दोमट मिट्टी इस फसल के लिए आदर्श मानी जाती है। जिमीकंद एक उष्णकटिबंधीय/उपोष्णकटिबंधीय फसल है और इसलिए गर्म आर्द्र जलवायु के तहत अच्छी तरह से पनपती है। इसकी सफल खेती के लिए 6-8 महीने की अवधि तक 30-35 डिग्री सेल्सियस का औसत वार्षिक तापमान और 1000-1500 मि.मी. की अच्छी तरह से वितरित वर्षा की आवश्यकता होती है। आमतौर पर इसे वर्षा आधारित फसल के रूप में उगाया जाता है

औषधीय गुण

अन्य कंदों के विपरीत, जिमीकंद के कई औषधीय उपयोग हैं जिन्हें व्यापक रूप से आयुर्वेदिक चिकित्सकों द्वारा निर्धारित किया गया है। इसे पोटेशियम, मैग्नीशियम, सेलेनियम, जस्ता, फॉस्फोरस और कैल्शियम जैसे तत्वों का समृद्ध स्रोत माना जाता है। यह एक अच्छा एंटी-इंफ्लेमेटरी एजेंट होने के साथ-साथ डिटॉक्सिफायर भी है। इसका उपयोग कार्मिनेटिव के रूप में किया जाता है और यह एक अच्छा कृमिनाशक भी होता है। यह बढ़ी हुए प्रोस्टेट ग्रंथियों की स्थिति में सुधार करता है तथा कब्ज की समस्या में मल त्याग को सामान्य बनाए रखने में भी उपयोगी है।

घनकंदों द्वारा जिमीकंद का प्रसार

लेकिन इसे सिंचित फसल के रूप में भी उगाया जा सकता है।

फसल का मौसम

जिमीकंद एक लंबी अवधि की फसल है और आमतौर पर यह 6-7 महीनों में परिपक्व हो जाती है। सिंचित परिस्थितियों में इसे गर्मियों (मार्च) में लगाया जाता है जोकि नवंबर तक परिपक्वता प्राप्त कर लेती है। वर्षा आधारित परिस्थितियों में फसल को मानसून की शुरुआत (जून) में लगाया जाता है। इस फसल को अनुकूल तापमान और पर्याप्त मिट्टी की नमी में वर्ष के किसी भी समय लगाया जा सकता है।

रोपण सामग्री और प्रसार

जिमीकंद का प्रसार घनकंदों द्वारा किया जाता है। नवंबर माह के दौरान काटे गए घनकंदों को हवादार कमरों में अच्छी तरह से संग्रहित किया जाता है। फरवरी के दौरान रोपण से पहले, घनकंदों को 750-1000 ग्राम वजन के सेटों में काट दिया जाता है। इसके बाद कटे हुए इन हिस्सों को गाय के गोबर के घोल या लकड़ी की राख से लिप्त किया जाता है और आंशिक छाया में सूखने दिया जाता है। 'रैपिड सीड घनकंद उत्पादन तकनीक' के अनुसार, निकट दूरी (45 सें. मी.×30 सें.मी.) पर रोपण के लिए 100 ग्राम आकार के घनकंदों और मिनी सेट का उपयोग किया जा सकता है।

जिमीकंद की 'गजेंद्र' किस्म

रोपण विधि

रोपण से पहले खेत को जुताई करके पूरी तरह से समतल किया जाना चाहिए। एक या दो जुताई के बाद 60×60×45 सें. मी. आकार के गड्ढे 90×90 सें.मी. की दूरी पर बनाए जाते हैं। इसके बाद इन गड्ढों को ऊपर की मिट्टी और अच्छी तरह से सूखे गोबर की खाद (2.0-2.5 कि.ग्रा./गड्ढे की दर से) और लकड़ी की राख से आधा भरा जाता है। रोपण सामग्री को गड्ढे में लंबवत रखा जाता है तथा गड्ढों को हरी पत्तियों या धान के भूसे जैसी जैविक पलवार से ढक दिया जाता है।

उर्वरक प्रबंधन

रोपण के 45 दिनों बाद, 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस और 50 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की दर से खेत में डाला जाता है। फसल की अच्छी उपज के लिए एक महीने के बाद फिर से 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन और 50 कि.ग्रा. पोटाश की मात्रा टॉप ड्रेसिंग के रूप में दी जाती है तथा साथ ही अंत: सस्य क्रियाएँ जैसे निराई, हल्की खुदाई और मिट्टी चढ़ाना आदि कार्य भी किए जाते हैं।

अंतर-फसल प्रबंधन

जिमीकंद के रोपण के 2-3 महीने के बाद की प्रारंभिक अवधि के दौरान विभिन्न फसलों जैसे कि हरी पत्तेदार सब्जियां, काला चना, लोबिया और ककड़ी आदि को अंतर-फसल के रूप में उगाया जा सकता है। केले, नारियल और अन्य नए लगाए गए बागों में जिमीकंद की अंतर-फसल से किसानों को अतिरिक्त आय भी प्राप्त होती है।

फसल सुरक्षा

जिमीकंद मुख्यत: प्रमुख कीटों और रोगों से मुक्त होता है। इस फसल में लगने वाले प्रमुख रोग कॉलर रॉट और जिमीकंद मोजैक रोग हैं। कॉलर रॉट *स्क्लेरोटियम रॉल्फ्सि* के कारण होता है और आमतौर पर 2 से 3 महीने पुराने पौधों में पाया जाता है। जल निकासी में सुधार, मिट्टी में नीम की खली का प्रयोग, *ट्राइकोडर्मा* जैसे जैव नियंत्रण एजेंट और कैप्टॉन (0.2%) फफूंदनाशी के उपयोग से इस रोग का प्रबंधन किया जा सकता है। जिमीकंद मोजैक रोग एफिड्स जैसे कीट वैक्टर के माध्यम से फैलता है और इसे रोगमुक्त रोपण सामग्री और प्रणालीगत कीटनाशकों के उपयोग से नियंत्रित किया जा सकता है।

खुदाई और उपज

पौधे के शीर्ष भाग के पूरी तरह से सूख जाने पर भूमिगत कंद को खुदाई करके लिया जाता है। फसल, रोपण के बाद 8 से 9 महीने में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है, हालांकि बेहतर बाजार मूल्य पर छह महीने बाद भी कंदों की खुदाई की जा सकती है। जिमीकंद की औसत उपज लगभग 30 से 40 टन प्रति हैक्टर तक होती है।

जिमीकंद की खुदाई एवं भंडारण

किस्मों का चयन

गजेंद्र: यह आंध्र प्रदेश के 'कोव्वूर' क्षेत्र का एक स्थानीय चयन है, जोकि 50-60 टन/हैक्टर उपज देने में सक्षम है। इसके कंद गैर तीखे, बड़े आकार के और सामान्यत: कॉर्मेल्स से रहित होते हैं।

श्री पद्मा: यह किस्म 'सेंट्रल ट्यूबर क्रॉप रिसर्च इंस्टीट्यूट, तिरुअनंतपुरम' में विकसित की गई है और इसकी उपज क्षमता 40 टन/हैक्टर है। इसके कंद गैर तीखे होते हैं और आम तौर पर एक मदर कॉर्म के साथ कुछ कॉर्मेल या प्रोपेग्यूल होते हैं।

कुसुम: यह किस्म 'बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय (पश्चिम बंगाल)' द्वारा विकसित की गई है तथा इसकी उपज क्षमता एवं अन्य विशेषताएं 'गजेंद्र' के समान ही हैं।